PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 2, ISSUE 1

'लडाई' नाटक में वर्तमान त्रासदी

डॉ. लावणे विजय भास्कर,
शोधनिर्देशक
महात्मा गांधी महाविद्यालय,
अहमदपूर जि. लातूर
महाराष्ट्र भारत

साहित्य का सबसे प्रभावकारी माध्यम नाटक है। नाटक के द्वारा हम पाठक के मन में सिधे प्रवेश करते है। इसी तरह का प्रयास सर्वेश्वरदयाल सवसेना ने 'लडाई' नाटक द्वारा किया है। नाटक का प्रमुख पात्र सत्यव्रत हिंसा, भ्रष्टाचार, झगडे, फसाद, झूठ, फरेब, बेईमानी, धोखाधडी और मक्कारी के विरुध्द लडने को जब निकलता है तो उसका कोई भी साथ नहीं देता बस कंडक्टर कम पैसे लेकर बिना तिकीट दिये किसतरह उचित जगह उतारते है, विरोध करने पर विरोध करने वाले को ही इस व्यवस्था में शान्त रहने के लिए कहा जाता है। राशन दफ्तर जाने के उपरान्त वहा सहाब किसतरह भ्रष्टाचार करके लोगों को राशन कार्ड बटाता है। यही बात समाचार पत्र में छपवाने के लिए जाने पर 'सत्यपथ' समाचार पत्र का सम्पादक किसतरह अफसरोंसे मिला होता है यह स्पष्ट होता है। सरकारी अस्पतालों में सामान्य गरीब को जगह नहीं मिलती पर मंत्री के रिश्तेदार को किसतहर तुरन्त जगह मिलती है और उच्च प्रति की सुविधा भी प्राप्त होती है। महाविद्यालयीन युवा वर्ग किसतरह अध्यापक और घर के बुजुर्ग लोगों से पेश आ रहा है। परिणाम स्वरुप वर्तमान युवक किसतरह भटक रहा है। देश के कई बाबा महंत, महाराज, गरिबों को अंधश्रध्दा के महाध्यमसे किसतरह फसाते है, कुछ लोग आश्रमों के नामपर काला धन किसतरह सफेद करते है यह 'परलोक आश्रम' के 'महेश्वरानन्द' द्वारा समझाया है। वर्तमान में चारो तरफ यही परिस्थिति दिखाई देती है। वर्तमान में स्वाभीमानी आदमी को ईस षडयत्रवादी, पूजीवादी, सत्ताधारी और चापलूसी करने वाले लोगों द्वारा किसतरह प्रतांडित और अपमानित किया जा रहा है। इसका चित्रण सर्वेश्वरदयाल सक्सेनाने सत्यव्रत के द्वारा करने का प्रयास किया है और यही आज की वर्तमान त्रासदी है।

हिन्दी साहित्य में कथा कविता, निबन्ध, उपन्यास आदि कई विधा है, उसमें नाटक विधा ऐसी है जीसके माध्यमसे स्थिति का परिपूर्ण चित्रण पाठक के सामने खडा हो सकता है ।''हमारे सामने जो रोज की समस्याएँ है उनका विवेचन और समाधान करने में ही नाटक की उपयोगिता है।'' 1) इसी कारण सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने 'लडाई' नाटक के द्वारा वर्तमान त्राासदी को चौदह दृश्य में विभाजित किया

है। इन चौदह दृश्य में एक सामान्य मध्यवर्गीय आदमी अन्याय के खिलाफ जब लडता है तब समाज व्यवस्था ही उसे किसतरह गलत सिध्द करती है यह इस नाटक में दिखाया गया है।

सत्यव्रत जब समाचार पत्र में हमेशा पढता है – हिसा, हंगामा, झगडे, फसाद, झूठ,फरेब, बेईमानी, धोखाधडी और मक्कारी। तब सत्यव्रत को बडा गुस्सा आता है क्योंकि सदियोंसे यह बाते होती रही है। पर इस परिस्थिति को सत्यव्रत जब बदलना चाहता है तब उसे घर कोई सदस्य साथ नहीं देता और जब उसकी मुलाकत डबल रोटी वाले से होती है तो वह उससे कहता है। तु बासी को ताजा कहकर बेचता है तब डबल रोटी वाला सत्यव्रत को कहता है लेना हो तो ले, झागडा देखने वाले भी सत्यव्रत कोही समझाते है। वर्तमान में यही हो रहा है। संच बोलने वाले कोही लोग समझाते है जाने दो व्यवस्था ऐसी ही है। तुम क्या कर सकते हो।

सत्यव्रत बाद में बस में बैठता है तब बस का कंडक्टर को एक आदमी पैसे देता है और बीना तिकट लेते ही उतरता है तब सत्यव्रत इस बात का विरोध करता है तब बस के लोग सत्यव्रत कोही शांत करते है। इसपेक्टर भी सबूत मागता है पर पैसे देकर तिकट लेने वाला उतर तो पहले ही गया था। तब कडक्टर ही सत्यव्रत को शरीफ आदमी के कानून पढता है। तब सत्यव्रत कहता है ''यानी गलत काम देखूँ, चुप रहूँ और यदि बोलने को कहा जाए तो झूठ बोलू '' 2) इस वाक्य से लेखकने समझाया है कि वर्तमान में भ्रष्टाचार करने में सिर्फ एक नहीं बल्की दूसरा भी उसका साथ देता है परिणाम स्वरुप भ्रष्टाचार बढता है। जब इसका कोई विरोध करने का प्रयास करता है तब उसकी स्थिति सत्यव्रत के समान होती है।

सत्यव्रत राशन दफ्तर जाता है तब उसे राशन दफ्तर का चपरासी बहार बैठाता है अंदर अधीकारी बाते करते बैठा रहता है, बहोत समय के उपरांत वह चपरसी से अंदर जाने के लिए बिनती करता है तब उसे रोका जाता है। तब सत्यव्रत गुस्से में जोरसे बोलता है तब अधिकारी बहार आता है उसी समय सत्यव्रत कहता है ''पिछले एक महीने से मेरा राशनकार्ड पडा हुआ है। दफ्तर के लोग घुस चाहते है।'' 3) तब अधिकारी शिकायत डिब्बे में शिकायत डालने के लिए कहता है, उची आवाज में बोलने के कारण सत्यव्रत को बहार निकाला जाता है। तब सत्यव्रत समाचार पत्र मे यही सारी घटना छपवाना चाहता है तब सत्यव्रत का सम्पादक दोस्त कहता है तु मेरे 'सत्यपथ' समाचार के लिए आजादी के उपरांत 'भारतीय समाज की प्रगती' पर लेख लिखकर दे । तुम्हारा काम हो जायेगा, राशन कार्ड तुम्हारे घर आ जायेगा। इस परिस्थिति द्वारा लेखकने दिखाया है कि हर दफ्तर में किसतरह सामान्य आदमी के साथ बूरा बर्ताव किया जाता है, सत्य बोलने पर बहार ही निकाला जाता है। समाचार में सच्ची घटना प्रकाशित करने जाये तो उसे विज्ञापन न मिलने का डर है। इस परिस्थिति से समझ में

आता है कि सच्चाई, इमादारी, की इस देश में किमंत नहीं है। झूठे और घूस देने वाले और चापलूसी करने वाले का वर्तमान में बडा उचा स्थान है।

सरकारी अस्पताल में सामान्य मरीज के लिए जगह नहीं है। पर मिनीस्टर साहब के आदमी के लिए जगह रहती है, और बीमार आदमी अस्पताल के बहार ही बीमारीसे दम तोड देता है। इस बात का जब सत्यव्रत विरोध करता है तब पुलिस सत्यव्रत को पकडकर ले जाते है और उसे इक्कीस बेंत लगाकर थाने से बहार फेंक देते है। वर्तमान में सरकारी अस्पतालों में क्या हो रहा है इसका दर्दनाक वर्णन इस नाटक में है। आज वर्तमान में इस परिस्थिति का जो विरोध करता है उसे सत्यव्रत के समान पिटा जाता है। गरिब अस्पताल के बहार तडप तडपकर मरता है। मंत्री, उसके रिश्तेंदारों के लिए हर सूविधा प्रदान होती है। आज सामान्य आदमी के पास न पैसा है न मंत्री की पहचान परिणाम स्वरुप वह भी मरता है।

सत्यव्रत को महाविद्यालयीन युवक युवतीया दिखती है। सारे छात्र महाविद्यालय के अध्यापक और माता पिता के बारे में अपमान जनक बाते करते है तब सत्यव्रत उनको सही गलत समझाता है तब युवक युवतीया उसका मजाक उडाते है। वर्तमान में यही हो रहा है युवक वर्ग को बडो का आदर सम्मान करना नहीं आता परिणाम स्वरुप घर में दो पीढीयों में संवाद प्रक्रिया बंद होती है, जो युवकों को समझााने का प्रयास करता है उसे पागल करार दिया जाता है या तो उसका भी मजाक ही उडाया जाता है।

परलोक आश्रम के महंत महेश्वरानन्द को जब सत्यव्रत पाप पुण्य की सही परिभाषा समझााता है तब महेश्वरानन्द ही उन्हें गलत करार देकर पश्चिमी शिक्षा को ही गलत कहते है। तब सत्यव्रत कहता है ''आपकी पोल काफी खुल चुकी है और भी खुलेगी, लेकिन देर लगेगी, क्योंकि आप दूसरों के भय पर अपनी नीव डालते है। शोषण करते है।'' 4) आज कई आश्रम और कई साधू, महंत, बाबा, निर्माण हो रहे है भ्रष्टाचार का पैसा इनके आश्रमों में बडे लोग देते है और आश्रम में सारी सूख–सूविधा प्रदान की जाती है कही कही सामान्य जनता को धर्म के नाम पर पुण्य मिलेगा इस कारण चंदा इकट्ठा करते है वहा आश्रम में महंत, बाबा रास लीला करते है।

एक खून में सत्यव्रत को गवाह बनाया जाता है तब वह पीडा और मार सहकर बेहोश होता है तब पत्नी उसे धुडते–धुडते पुलिस स्टेशन आति है तब बेहोश पती को अस्पताल लाती है डॉक्टर उसे पागल ठहराते है। वर्तमान में यही हो रहा है जो आदमी सत्य की राहपर चलता है, भ्रष्टाचार को उजाले में लाता है उसे पागल साबीत करके सारे गुनाहों पर पर्दाडाल दिया जाता है।

सत्य की लडाई लडने जब सत्यव्रत निकलता है तो डबल रोटीवाला गलत होकर भी उची आवाज में आवाज करता है। बस कडक्टर के द्वारा लेखक ने लोग किसतरह से कम पैसे देकर तिकीट

न लेकर उचीत जगह उतारते है और इसका विरोध करने पर विरोध करने वालेकोही शान्त रहने के लिए कहा जाता है। सरकारी दफ्तरों का उदाहरण देने के लिए लेखकने राशन दफ्तर का उदाहरण बडा सुंदर दिया है दफ्तर का चपरासी और सहाब किसतरह मिलकर भ्रष्टाचार करते है और समाचार पत्र वाले किसतरह इन बडे अफसरोंसे मिले रहते है। यह 'सत्यपथ' समाचार पत्र के सम्पादक द्वारा समझाया है।

सरकारी अस्पतालों की व्यवस्था किसतरह गलत है गरीब बीमार मरीज को अस्पताल में जगह नहीं है पर मंत्री के आदमी को तुरन्त जगह मिलती है। आज सभी जगह यही चित्रण है। वर्तमान युवावर्ग किसतरह महाविद्यालयीन अध्यापकों, घर के बुजुर्ग लोगों से पेश आते है इसका जिता–जागता वर्णन लेखकने किया है। आदर सम्मान की भावना समाप्त हो गयी है तो एक तरफ धर्म और पाप पुण्य के नाम पर सामान्य गरीबों को शोषण करते है। बाबा, महाराज, महंत, बडे बडे आलिशान महल जैसे आश्रमों में गरीबों का खून चुसते है या तो भ्रष्टाचार का काला पैसा सफेद किया जाता है। इस परिस्थिति को लेखकने परलोक आश्रम के महेश्वरानन्द के माध्यमसे समझाने का प्रयास किया है।

लेखक सर्वेश्वरदयाल सवसेना नें वर्तमान में सामान्य आदमी को किन–किन परिस्थितियों का सामना करना पडता है तब क्या समस्या निर्माण होती है। सामान्य आदमी को पूजीवादी, सत्ताधारी और चापलूसी करने वाले स्वाभीमानी और सत्य की राह पर चलने वाले को किसतरह परेशान करके उसका जीवन किसतरह पीडा और संघर्ष मय बनाकर उसे एक दिन पागल करार देते है इसका चित्रण इस नाटक में किया गया है और वर्तमान में सामान्य आदमी को इसी त्रासदी कां सामना करना पडता है।

संदर्भ

1) डॉ.नगेन्द्र / आधुनिक हिन्दी नाटक / नेशनल पब्लिशिंग हाऊस / नवीन संस्करण 1970 / पृष्ठ–3
2) सर्वेश्वदयाल सक्सेना / लडाई / वाणी प्रकाशन / प्रथम संस्करण 1999 / पृष्ठ–22
3) सर्वेश्वदयाल सक्सेना / लडाई / वाणी प्रकाशन / प्रथम संस्करण 1999 / पृष्ठ–24
4) सर्वेश्वदयाल सक्सेना / लडाई / वाणी प्रकाशन / प्रथम संस्करण 1999 / पृष्ठ–52